कोरोना काल दूरदर्शन पर प्रसारित धारावाहिकों से माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के संवेगात्मक विकास का अध्ययन

टेशु कुमार सिंहा शोधछात्र, ओरियंटल यूनिवर्सिटी, इंदौर

डॉ. ज्योति गंगराडे शोध निर्देशिका ओरियंटल यूनिवर्सिटी, इंदौर

शोधसार

कोरोना महामारी के दौरान, दूरदर्शन पर प्रसारित धारावाहिकों ने छात्रों के संवेगात्मक विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। इस अध्ययन में आत्म–जागरूकता, आत्म–नियमन, प्रेरणा, सहानुभूति और संबंध प्रबंधन के आयामों पर पड़ने वाले प्रभावों का विश्लेषण किया गया। अनुसंधान के दौरान माध्यमिक विद्यालयों के सी.बी.एस.ई और बी.एस.ई.बी में अध्ययनरत छात्र और छात्राओं के संवेगात्मक विकास का तुलनात्मक अध्ययन किया गया।

इस शोध पत्र कोरोना काल में दूरदर्शन पर प्रसारित धारावाहिकों द्वारा माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के संवेगात्मक विकास के अध्ययन पर केंद्रित है। इस अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि इन धारावाहिकों ने आत्म–जागरूकता, आत्म–नियमन, प्रेरणा, सहानुभूति और संबंध प्रबंधन के विकास में योगदान दिया।

भूमिका

कोरोना महामारी के दौरान, जब पूरी दुनिया लॉकडाउन में थी, तब लोगों के मनोरंजन और मानसिक स्वास्थ्य को बनाए रखने के लिए दूरदर्शन पर कई लोकप्रिय धारावाहिकों का पुनः प्रसारण किया गया। यह समय न केवल मनोरंजन के लिए बल्कि सामाजिक मूल्यों, संस्कृति और शिक्षा के दृष्टिकोण से भी महत्वपूर्ण था। दूरदर्शन ने इस अवधि में कई प्रतिष्ठित और ऐतिहासिक धारावाहिकों को फिर से प्रसारित किया, जिनका व्यापक दर्शक वर्ग था। दूरदर्शन पर प्रसारित विभिन्न धारावाहिकों ने बच्चों के मनोरंजन, नैतिक, संवेगात्मक विकास आदि विभिन्न आयामों पर व्यापक प्रभाव डाला इससे जानने के लिए प्रस्तुत शोधपत्र को तैयार किया गया है।

1. दूरदर्शन के पुनः प्रसारित प्रमुख धारावाहिक

कोरोना काल में दर्शकों को घर में बनाए रखने और उन्हें सकारात्मक रूप से जोड़ने के लिए दूरदर्शन ने कई पुराने और प्रसिद्ध धारावाहिकों को पुनः प्रसारित किया। इनमें **रामायण, महाभारत, शक्तिमान, चाणक्य, श्रीकृष्णा, ब्योमकेश बख्शी, सर्कस, देख भाई देख, और मालगुड़ी डेज़** जैसे प्रतिष्ठित कार्यक्रम शामिल थे।

1. **रामायण और महाभारत–** रामानंद सागर की रामायण और बी.आर. चोपड़ा की महाभारत को सबसे अधिक लोकप्रियता मिली। इन धारावाहिकों को देखकर न केवल बुजुर्ग बल्कि युवा वर्ग भी भारतीय संस्कृति और धार्मिक कथाओं से अवगत हुआ। इस दौरान रामायण और महाभारत के प्रसारण ने दूरदर्शन की टीआरपी को ऐतिहासिक ऊंचाई पर पहुँचा दिया।
2. **शक्तिमान–** भारत का पहला सुपरहीरो शक्तिमान भी इस दौरान बच्चों के बीच काफी लोकप्रिय रहा। इस धारावाहिक ने बच्चों को नैतिकता, ईमानदारी और आत्म–संयम की सीख दी।
3. **चाणक्य और श्रीकृष्णा–** चाणक्य नीति पर आधारित यह धारावाहिक युवाओं और विद्यार्थियों के लिए प्रेरणादायक था। वहीं, श्रीकृष्णा ने भी भक्तों और धार्मिक प्रवृत्ति के लोगों के बीच अपनी अलग पहचान बनाई।

इन धारावाहिकों का उद्देश्य–

भारत सरकार ने इन धारावाहिकों को कोरोना काल के दौरान सामाजिक, नैतिक और मानसिक रूप से लोगों को सुदृढ बनाने के लिए प्रस्तुत किया गया है।

1. **संवेगात्मक विकास–** इन धारावाहिकों में दिखाए गए पात्रों और उनकी कहानियों से लोगों ने आत्म–जागरूकता, आत्म–नियंत्रण, प्रेरणा, सहानुभूति और संबंध प्रबंधन जैसे तत्वों को आत्मसात किया।
2. **सामाजिक एकता–** इन धारावाहिकों ने भारतीय समाज में एकता और सांस्कृतिक मूल्यों को मजबूत करने का कार्य किया।
3. **परिवार के साथ समय–** लॉकडाउन के दौरान परिवारों ने एक साथ बैठकर इन कार्यक्रमों का आनंद लिया, जिससे पारिवारिक संबंध मजबूत हुए।

विद्यार्थियों के संवेगात्मक विकास–

विद्यार्थियों के संवेगात्मक विकास का उनके संपूर्ण व्यक्तित्व, सीखने की क्षमता और सामाजिक जीवन पर गहरा प्रभाव पड़ता है। यह विकास उनकी आत्म–जागरूकता, आत्म–नियमन, प्रेरणा, सहानुभूति और संबंध प्रबंधन जैसे महत्वपूर्ण आयामों से जुड़ा होता है। कोरोना महामारी के दौरान, जब विद्यालय बंद थे और ऑनलाइन शिक्षा या दूरदर्शन पर प्रसारित शैक्षिक कार्यक्रमों पर निर्भरता बढ़ गई थी, तब विद्यार्थियों के संवेगात्मक विकास में भी परिवर्तन देखा गया। संवेगात्मक विकास के प्रमुख आयाम संवेगात्मक बुद्धि के अंतर्गत निम्नलिखित पाँच महत्वपूर्ण आयाम होते हैं–

1. **आत्म–जागरूकता–** विद्यार्थियों को अपने विचारों, भावनाओं और मानसिक स्थिति को समझने की क्षमता विकसित करनी होती है। कोरोना काल में जब विद्यार्थियों को स्कूल जाने और दोस्तों से मिलने का अवसर नहीं मिला, तब आत्म–जागरूकता का विकास उनके भावनात्मक अनुभवों पर निर्भर था।
2. **आत्म–नियमन–** आत्म–नियमन का अर्थ है कि विद्यार्थी अपनी भावनाओं को नियंत्रित करने और परिस्थितियों के अनुसार उचित प्रतिक्रिया देने में सक्षम हों। महामारी के दौरान विद्यार्थियों को अकेलेपन, तनाव और चिंता से जूझना पड़ा, जिसके कारण कई लोगों में आत्म–नियमन की प्रवृत्ति कमजोर पाई गई।
3. **प्रेरणा–** प्रेरणा ही वह शक्ति है जो विद्यार्थियों को अपने लक्ष्य प्राप्त करने के लिए प्रेरित करती है। ऑनलाइन शिक्षा प्रणाली और दूरदर्शन के शैक्षिक कार्यक्रमों ने कुछ विद्यार्थियों को प्रेरित किया, लेकिन कई विद्यार्थियों में प्रेरणा की कमी भी देखी गई।
4. **सहानुभूति–** सहानुभूति का अर्थ है कि विद्यार्थी दूसरों की भावनाओं और परिस्थितियों को समझें और उनके प्रति संवेदनशील रहें। कोरोना काल में विद्यार्थियों ने अपने परिवार और समाज के प्रति अधिक सहानुभूति विकसित की क्योंकि उन्होंने कठिनाइयों को नजदीक से देखा।
5. **संबंध प्रबंधन–** संबंध प्रबंधन विद्यार्थियों को दूसरों के साथ अच्छे संबंध स्थापित करने, सहयोग करने और संवाद कौशल विकसित करने में सहायता करता है। इस अवधि में डिजिटल माध्यम से संवाद सीमित होने के कारण कुछ विद्यार्थियों के सामाजिक कौशल प्रभावित हुए, जबकि कुछ ने ऑनलाइन नेटवर्किंग के माध्यम से अपने संबंध प्रबंधन को मजबूत किया।

शोध उद्देश्य–

1. कोरोना काल में दूरदर्शन पर प्रसारित धारावाहिकों का माध्यमिक विद्यालय सी.बी.एस.ई एवं बी.एस.ई.बी में अध्ययनरत बालकों के संवेगात्मक विकास का अध्ययन करना।
2. कोरोना काल में दूरदर्शन पर प्रसारित धारावाहिकों का माध्यमिक विद्यालय सी.बी.एस.ई एवं बी.एस.ई.बी में अध्ययनरत बालिकाओं के संवेगात्मक विकास का अध्ययन करना।

परिकल्पनाएँ–

1. कोरोना काल में दूरदर्शन पर प्रसारित धारावाहिकों का माध्यमिक विद्यालय सी.बी.एस.ई एवं बी.एस.ई.बी में अध्ययनरत बालकों के संवेगात्मक विकास में कोई सार्थक अंतर नहीं है।
2. कोरोना काल में दूरदर्शन पर प्रसारित धारावाहिकों का माध्यमिक विद्यालय सी.बी.एस.ई एवं बी.एस.ई.बी में अध्ययनरत बालिकाओं के संवेगात्मक विकास में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

अनुसंधान विधि– इस अध्ययन में अनादृच्छिक सुविधा चयन विधि का उपयोग किया गया। जनसंख्या– सी.बी.एस.ई एवं बी.एस.ई.बी बोर्ड के माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थी ही जनसंख्या का हिस्सा है। 352 न्यादर्श का संकलन किया गया है जो कि 176 विद्यार्थी सी.बी.एस.ई बोर्ड से एवं 176 विद्यार्थी बी.एस.ई.बी बोर्ड से लिए गए है। प्रदत्तों का संग्रह करने के लिए स्वनिर्मित रेटिंग स्केल का प्रयोग किया गया जिसकी वैद्यता एवं विश्वसनीयता विधिवत ज्ञात कर ली गई थी।

प्रदत्तों का विश्लेषण–

कोरोना काल में दूरदर्शन पर प्रसारित धारावाहिकों का माध्यमिक विद्यालय सी.बी.एस.ई एवं बी.एस.ई.बी बोर्ड में अध्ययनरत बालक और बालिकाओं ने संवेगात्मक बुद्धि के उपकरण पर 60 वाक्यों के आधार से पाँच बिन्दुओं पर प्रतिक्रिया प्रदान की उसमें उनका उच्चतम मध्यम और निम्न बिन्दु का प्रतिशत इस प्रकार प्राप्त हुआ। उच्च प्राप्तांक को ज्ञात करने के लिए मध्यमान को मानक विचलन से जोड़कर प्राप्त किया। निम्न प्राप्तांक को मध्यमान से मानक विचलन को घटाकर और निम्न और उच्च बिन्दु के मध्य आने वाले प्राप्तांकों को मध्यम अंक के रूप में लिया गया जो कि इस प्रकार है–

तालिका क्र. 1 कोरोना काल में दूरदर्शन पर प्रसारित धारावाहिकों का माध्यमिक विद्यालय सी.बी.एस.ई एवं बी.एस.ई.बी में अध्ययनरत बालक और बालिकाओं के संवेगात्मक बुद्धि के स्तर का प्रतिशतीय विवेचन–

स्तर	**सी.बी.एस.ई बोर्ड**	**बी.एस.ई.बी बोर्ड**

न्यादर्श संख्या	88	88	88	88
स्तर	छात्र प्रति.	छात्रा प्रति.	छात्र प्रति.	छात्रा प्रति.
उच्च स्तर	13.64	13.64	21.59	17.05
औसत स्तर	69.32	71.59	67.05	67.05
निम्न स्तर	17.05	14.77	11.36	15.91
कुल	**100**	**100**	**100**	**100**

तालिका क्र. 1 के अवलोकन से ज्ञात होता है कि तीनों ही श्रेणी के विद्यार्थियों अर्थात् बालक और बालिकाओं के सांवेगिक बुद्धि के स्तर का प्रतिशत सर्वाधिक औसत श्रेणी में ही प्राप्त किए हैं, इसी श्रेणी में सबसे अधिक अंक सी.बी.एस.ई बोर्ड की छात्राओं ने 71.59 और बालकों ने 69.32 प्रतिशत व बी.एस.ई.बी बोर्ड बालक और बालिकाओं ने 67.05 प्रतिशत अंक प्राप्त किए हैं।

उच्च स्तर पर धारावाहिकों से सांवेगिक बुद्धि के स्तर का प्रतिशत सर्वाधिक बी.एस.ई.बी बोर्ड बालक ने 21.59 व इसी बोर्ड की बालिकाओं ने 17.05 प्रतिशत प्राप्त किए तथा सी.बी.एस.ई बोर्ड के बालक और बालिकाओं ने 13.64 प्रतिशत उच्चतम अंक प्राप्त किए गए। इसी विवरण को आरेख क्र. 1 में प्रदर्शित किया जा रहा है।

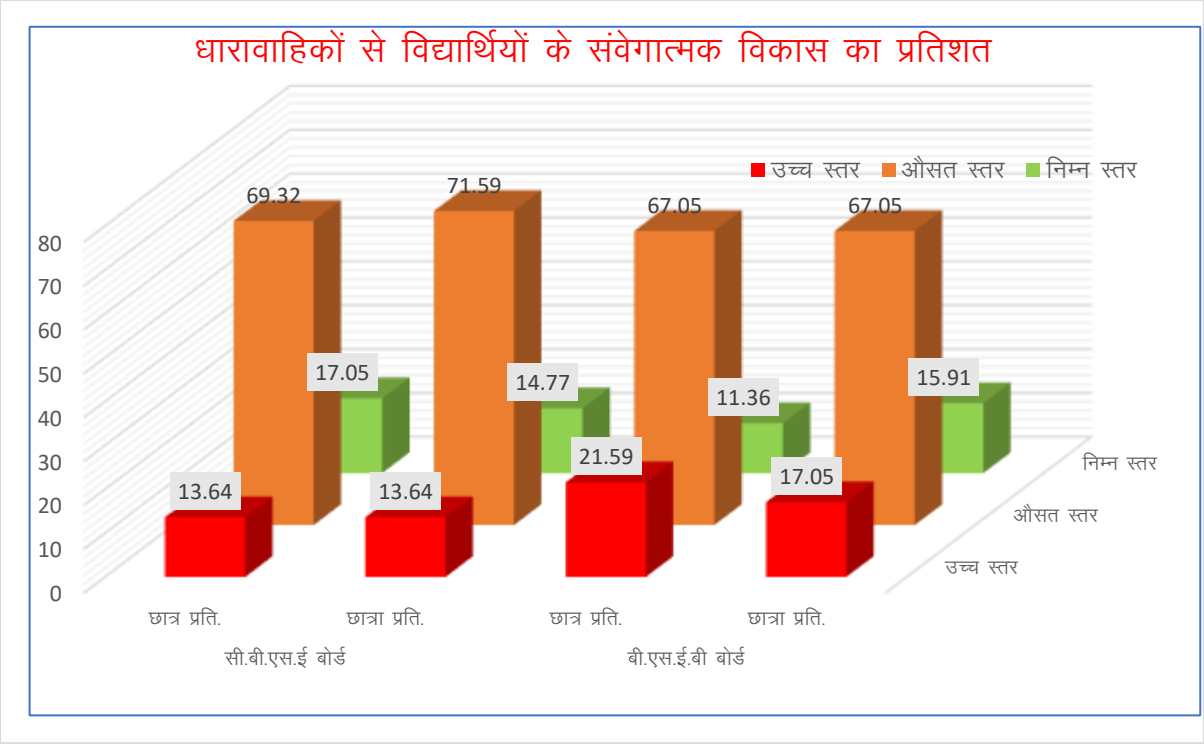

तालिका क्र. 2 कोरोना काल में दूरदर्शन पर प्रसारित धारावाहिकों का माध्यमिक विद्यालय सी.बी. एस.ई एवं बी.एस.ई.बी में अध्ययनरत बालक और बालिकाओं के संवेगात्मक विकास का अध्ययन करना।

कोरोना काल में दूरदर्शन पर अनेक धारावाहिकों का प्रसारण किया गया, जिसमें से मुख्य रूप से रामायण, महाभारत, शक्तिमान, चाणक्य, श्रीकृष्णा, ब्योमकेश बख्शी, सर्कस, देख भाई देख, और मालगुड़ी डेज़ आदि है। इनकों सभी ने आनंद का साथ देखा। इस शोध में माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों के संवेगात्मक विकास में उन धारावाहिकों के प्रभावित किया है। इसके लिए दोनों बोर्ड़ सी.बी.एस.ई एवं बी.एस.ई.बी के विद्यार्थियों से प्रदत्तों का संकलन किया जो कि निम्न प्रकार से है–

	बालक मध्यमान (N=88+88)	**बालिका (N=88+88)**
सी.बी.एस.ई बोर्ड	207.57	211.30
बी.एस.ई.बी बोर्ड	195.14	203.69

माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत सी.बी.एस.ई एवं बी.एस.ई.बी बोर्ड़ के बालक और बालिकाओं के प्राप्तांकों का मध्यमान निकाला गया जो कि सबसे अधिक मध्यमान सी.बी.एस.ई बोर्ड की बालिकाओं ने 211.30 प्राप्त किया जो कि सभी में सर्वोत्कृष्ट प्राप्तांक हैं। इसके बाद इसी बोर्ड के बालकों ने 207.57 प्राप्त किया। बी.एस.ई.बी बोर्ड में बालिकाओं ने 203.69 मध्यमान प्राप्त किया और सबसे कम इसी बोर्ड के बालकों ने 195.14 प्राप्त किए।

परिकल्पनाओं का परीक्षण–

तालिका 3 कोरोना काल में दूरदर्शन पर प्रसारित धारावाहिकों का माध्यमिक विद्यालय सी.बी.एस.ई एवं बी.एस.ई.बी में अध्ययनरत बालकों के संवेगात्मक विकास में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

चर	**मध्यमान**	**कुल संख्या**	**मानक विचलन**	**मध्यमानों का अंतर**	**t मान**
सी.बी.एस.ई बोर्ड के बालक	207.58	88	15.5	12.44	6.516

बी.एस.ई.बी बोर्ड के बालक	195.14	88	8.93		

स्वतंत्रता का स्तर 174 और 0.05 स्तर पर तालिका का टी मान–1.94

तालिका क्र. 3 के अवलोकन से ज्ञात होता है कि धारावाहिकों का माध्यमिक विद्यालय के सी.बी.एस.ई एवं बी.एस.ई.बी में अध्ययनरत बालकों के संवेगात्मक विकास का तालिका मूल्य 0.05 स्तर पर 1.984 है। दोनों का स्वतंत्रता का स्तर Degree of Freedom 174 है। सी.बी.एस.ई बोर्ड के बालकों का मध्यमान 207.58 और मानक विचलन 15.5 आया है। बी.एस.ई.बी बोर्ड के बालकों का मध्यमान 195.14 और मानक विचलन 8.93 आया है। दोनों मध्यमानों का अंतर 12.44 निकालने के बाद टी मूल्य 6.516 आया जो टी तालिका मान से बहुत अधिक होने के कारण उक्त शून्य परिकल्पना को **अस्वीकृत किया गया है।**

तालिका क्र. 4 कोरोना काल में दूरदर्शन पर प्रसारित धारावाहिकों का माध्यमिक विद्यालय सी.बी. एस.ई एवं बी.एस.ई.बी में अध्ययनरत बालिकाओं के संवेगात्मक विकास में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

चर	मध्यमान	कुल संख्या	मानक विचलन	मध्यमानों का अंतर	t मान
सी.बी.एस.ई बोर्ड के बालिका	211.31	88	18.27	7.61	2.97
बी.एस.ई.बी बोर्ड के बालिका	203.69	88	15.86		

स्वतंत्रता का स्तर 174 और 0.05 स्तर पर तालिका का टी मान– 1.94

तालिका क्र. 4 के अवलोकन से ज्ञात होता है कि धारावाहिकों का माध्यमिक विद्यालय के सी.बी.एस.ई एवं बी.एस.ई.बी में अध्ययनरत बालिकाओं के संवेगात्मक विकास का तालिका मूल्य 0. 05 स्तर पर 1.984 है। दोनों का स्वतंत्रता का स्तर Degree of Freedom 174 है। सी.बी.एस.ई बोर्ड के बालिकाओं का मध्यमान 211.31 और मानक विचलन 18.27 आया है। बी.एस.ई.बी बोर्ड के बालिकाओं का मध्यमान 203.69 और मानक विचलन 15.86 आया है। दोनों मध्यमानों का अंतर 7.61 निकालने के बाद टी मूल्य 2.97 आया जो टी तालिका मान से अधिक होने के कारण उक्त शून्य परिकल्पना को **अस्वीकृत किया गया है।**

निष्कर्ष– इस शोध से यह निष्कर्ष निकाला गया कि कोरोना काल में दूरदर्शन पर प्रसारित धारावाहिकों ने माध्यमिक स्तर के बालक और बालिकाओं का संवेगात्मक विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है, साथ दोनों बोर्ड के बालक और बालिकाओं में भी सार्थक अंतर की दशा धारावाहिकों के प्रभाव को प्रदर्शित करती है। शोध पत्र कोरोना काल में दूरदर्शन पर प्रसारित धारावाहिकों द्वारा माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के संवेगात्मक विकास के अध्ययन पर केंद्रित है। इस अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि इन धारावाहिकों ने आत्म–जागरूकता, आत्म–नियमन, प्रेरणा, सहानुभूति और संबंध प्रबंधन के विकास में योगदान दिया।

अनुशंसाएँ–

1. शिक्षा नीति निर्माताओं को संवेगात्मक विकास को बढ़ावा देने वाले कार्यक्रमों को पाठ्यक्रम में सम्मिलित करना चाहिए।
2. शिक्षकों एवं अभिभावकों को बच्चों के संवेगात्मक विकास के प्रति जागरूक किया जाना चाहिए।
3. दूरदर्शन एवं अन्य शैक्षिक माध्यमों को बच्चों के मानसिक स्वास्थ्य को ध्यान में रखते हुए कार्यक्रम विकसित करने चाहिए।

सन्दर्भ ग्रन्थ–

1. सिंह, अरूण कुमार (2009). शिक्षा मनोविज्ञान, भारती भवन, पीएच.डी. पटना.
2. हरलाक, ई.वी. (1979). डेवलपमेन्टल साइकोलाजी, टी.एम. एवं पब्लिकेशन, नई दिल्ली.
3. आई.ए., गेटस एवं जरसील (1958). शिक्षा मनोविज्ञान, न्यूयार्क.
4. कपिल, एच.के. (2009), सांख्यिकीय के मूल तत्व, विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा.
5. पाठक, पी.डी. (2009). शिक्षा मनोविज्ञान, विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा.
6. मंगल, एस.के. (2010). शिक्षा मनोविज्ञान पी.एच.आई. लर्निंग प्राइवेट लिमिटेड, नई दिल्ली.
7. भटनागर, सुरेश (2010). शिक्षा मनोविज्ञान, आर. लाल बुक डिपो, मेरठ.
8. काशीनाथ, एच. एम. (2003). एड्जस्टमेंट कम्पोनेंट ऑफ़ स्टूडेंट्स स्टडींग इन जवाहर नवोदय विद्यालय, ए कलस्टर एनालिसिस, जनरल ऑफ़ कम्यूनिटी गाइडेन्स एण्ड रिसर्च 20(3), पृ . 295–304.
9. Good, T. L., & Brophy, J. E. (1973). **Educational Psychology: A Realistic Approach**. Holt, Rinehart, and Winston.

10. Pollock, J. E. (1985). Classroom Instruction That Works: Research-based Strategies for Increasing Student Achievement. ASCD.
11. Singer, S., & Tyler, C. (1997). **Learning and Study Strategies: Issues in Assessment, Instruction, and Evaluation**. Lawrence Erlbaum Associates.
12. Ozoemena, E. (2013). **Study Habits and Academic Performance of Students in Tertiary Institutions**. Journal of Educational Research.
13. Roberts, A. (2015). **Study Skills: Strategies for Taking Control of Your Learning**. Pearson Education.